International Journal of Home Science 2019; 5(3): 304-309

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(3): 304-309
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 01-08-2019
Accepted: 05-09-2019

पल्लवी गुप्ता
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
ल०ना०मि० विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० रेणु कुमारी
शोध पर्यवेक्षक, विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग, लोहिया चरण सिंह महाविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
पल्लवी गुप्ता
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
ल०ना०मि० विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

किशोर में भावनात्मक विकास का महत्व

पल्लवी गुप्ता, डॉ० रेणु कुमारी

सारांश
किशोर के जीवन में भावनात्मक विकास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भावनात्मक विकास के कारण कभी-कभी व्यक्ति इतना प्रेरित हो जाता है कि वह जाति, धर्म, देश और मानवता के लिए बड़े-बड़े कार्य करने के लिए तत्पर हो जाता है और ऐसे कार्यों को कर भी जाता है। 'Emotion' शब्द लैटिन भाषा के शब्द Emover से लिया गया है, जिसका अर्थ Out या To Move अर्थात् भड़क उठना या उद्दीप्त होना है। संवेग भाव (Feeling) के अति निकट होने के कारण जब कभी भी भाव की मात्रा बढ़ती है तब शरीर उद्दीप्त हो जाता है और उद्दीप्त अवस्था को ही संवेग (भय, क्रोध, प्रेम, ईर्ष्या, जिज्ञासा, चिन्ता, दुःख, शर्म आदि) कहते हैं। भावनात्मक विकास के सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने से पूर्व यह आवश्यक है कि इसके अर्थ को समझ लिया जाय। संवेग के अर्थ को स्पष्ट करते हुए आइजेनक और उनके साथियों (1972) ने लिखा हैं कि अधिकांश विद्वान इस बात से सहमत हैं कि संवेग वह जटिल अवस्था है जिसमें व्यक्ति किसी वस्तु या परिस्थिति को अधिक बढ़ा हुआ प्रत्यक्षीकरण करता है, इसमें बड़े स्तर पर शारीरिक परिवर्तन होते हैं, इसमें व्यक्ति का व्यवहार Approach या Withdrawal की ओर संगठित होता है तथा अनुभूति आकर्षण या प्रतिकर्षण की सूचना देता है।

कूटशब्द : भय, क्रोध, प्रेम, ईर्ष्या, जिज्ञासा, चिन्ता, दुःख, शर्म, संवेग भाव

प्रस्तावना
संवेग के सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने से पूर्व आवश्यक है कि इसके अर्थ को समझ लिया जाय। Emotion लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है-भड़क उठना या उद्दीप्त होना। यंग (P. T. Young, 1961) ने संवेग को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "संवेग सम्पूर्ण व्यक्ति का तीव्र उपद्रव है इसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है तथा इसमें व्यवहार, चेतन अनुभव तथा अन्तरावयव क्रियाएँ सम्मिलित हैं।" इंगलिश और इंगलिश (1981) के अनुसार संवेग एक जटिल भावना की स्थिति है। इसमें गत्यात्मक तथा ग्रन्थीय (Glandular) क्रियाएँ होती हैं अथवा यह वह जटिल व्यवहार है जिसमें अन्तरावयव क्रियाएँ महत्त्वपूर्ण हैं।

संवेग भाव या अनुभूति के अति निकट होने के कारण जब भाव की मात्रा बढ़ जाती है तब शरीर उद्दीप्त हो जाता है, इस उद्दीप्त अवस्था को ही संवेग (भय, क्रोध, प्रेम, चिन्ता, इर्ष्या, जिज्ञासा आदि) कहते हैं। संवेग के कारण व्यक्ति कभी-कभी इतना प्रेरित हो जाता है कि वह राष्ट्र, धर्म, जाति, समूह और मानवता के लिए बहुत बड़े-बड़े कार्य करने के लिए तत्पर हो जाता है।

इस अवस्था में वह कठिन से कठिन कार्य कर जाता है। अतः इनका किशोर के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। संवेग प्राणी या व्यक्ति को आकस्मिक परिस्थितियों में सुरक्षा भी प्रदान करते हैं, क्योंकि इनकी उपस्थिति में व्यक्ति की क्रियाशीलता अधिक बढ़ जाने से वह खतरनाक परिस्थितियों से अपनी रक्षा करता है या कर सकता है।

किशोर के भावनात्मक विकास का महत्त्व (Importance of Children's Emotion)

किशोर के भावनात्मक विकास का उनके जीवन में बहुत महत्त्व है। किशोर के भावनात्मक विकास के कुछ प्रमुख महत्त्व निम्न प्रकार से हैं-

1. बालक के प्रत्येक दिन के अनुभवों में भावनात्मक विकास से आनन्द जुड़ जाता है। किशोर को जिज्ञासा, स्नेह, हर्ष आदि से तो सुखानुभूति प्राप्त होती है, साथ ही साथ क्रोध और भय जैसे भावनात्मक विकास की अभिव्यक्ति कर बालक तनाव मुक्त हो जाता है। हर्ष (Joy) संवेग के सम्बन्ध में हरलॉक (1978) ने लिखा है कि शारीरिक रूप से हर्ष प्रकृति की श्रेष्ठ औषधि है क्योंकि इससे तनाव समाप्त हो जाता है और शरीर आराम की स्थिति में आ जाता है। मनोवैज्ञानिक रूप से देखा जाय तो हर्ष में बालक के सभी अनुभव सुखद हो जाते हैं।
2. जब भावनात्मक अनुक्रियाओं की किशोर में बार-बार पुनरावृत्ति होती है तो यह भावनात्मक अनुक्रियाएँ किशोर में आदत के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। बहुधा वही भावनात्मक अनुक्रियाएँ आदत में परिवर्तित होती हैं जो बालक के लिए सुखदायी होती हैं।
3. बालक के सभी संवेग और भावनात्मक अनुक्रियाएँ उसकी सामाजिक अर्न्तक्रियाओं (Social Interactions) को प्रभावित करती हैं।
4. बालक का जीवन के प्रति दृष्टिकोण भावनात्मक विकास से प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए बालक यदि बहुत क्रोधी है तो हो सकता है कि अधिक क्रोध के कारण उसका समायोजन बिगड़ जाय।
5. बच्चे भावनात्मक विकास के द्वारा आत्म मूल्यांकन (Self-Evaluation) और सामाजिक मूल्यांकन (Social Evaluations) करते हैं। किसी भी बालक की भावनात्मक अभिव्यक्तियों से उसके व्यवहार और व्यक्तित्व का मूल्यांकन सम्भव है। बहुधा बालक में तो संवेग तीव्र मात्रा में होते हैं उससे ही उसका मूल्यांकन किया जाता है। बालक भावनात्मक परिस्थितियों में भावनात्मक अभिव्यक्ति किस प्रकार करता है इससे यह स्वयं आत्म मूल्यांकन कर सकता है।
6. भावनात्मक विकास बालक को क्रियाशील बनाते हैं। भावनात्मक विकास की अवस्था में हृदय की धड़कनें बढ़ जाती हैं, माँसपेशियों की थकान कम हो जाती है, लिवर से रक्त शर्करा अधिक निकलती है, थायरॉइड और एड्रीनल ग्रन्थियों के स्त्राव भी अधिक मात्रा में निकलते हैं। इन सबसे बालक की क्रियाशीलता बढ़ जाती है। यदि बालक की बढ़ी हुई यह क्रियाशीलता व्यक्त नहीं हो पाती है तो वह नर्वस (Nervous) हो जाता है।
7. किशोर की भावनात्मक विकास के कारण बढ़ी हुई क्रियाशीलता यदि व्यक्त नहीं हो पाती है तो उनमें वाणी सम्बन्धी दोष उत्पन्न हो सकते हैं। अँगूठा चूसने और नाखून काटने जैसे व्यवहार भी विकसित हो सकते हैं।
8. भावनात्मक विकास में शारीरिक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों से बालक के बारे में यह ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है कि बालक क्या और कैसा अनुभव कर रहा है।
9. जब बालक में कटु संवेग उत्पन्न होते रहते हैं, और अक्सर उत्पन्न होते रहते हैं तो बहुत कुछ सम्भावना होती है कि भावनात्मक विकास से बालक का अधिगम, पुनःस्मरण, तर्क, ध्यान लगाने की क्षमता, आदि मानसिक क्रियाओं पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
10. किशोर के संवेग वह जिस वातावरण में रहता है उसके मनोवैज्ञानिक वातावरण को प्रभावित करते हैं जो बदले में बालक के व्यवहार को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, झगड़ालू और ईष्यालु बालक के माता-पिता और परिवार के व्यक्ति उससे चिढ़ सकते हैं। परेशान हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में बालक को जो स्वस्थ पारिवारिक वातावरण और माता-पिता का स्नेह मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाता है।

भावनात्मक प्रतिमानों का विकास (Development of Emotional Pattern)

भावनात्मक प्रतिमानों का विकास किस प्रकार होता है, इसका ज्ञान आवश्यक है क्योंकि इन प्रतिमानों के ज्ञान के आधार पर ही किशोर को भावनात्मक विकास के अधिक से अधिक लाभ उपलब्ध कराये जा सकते हैं।

नवजात शिशु में भी भावनात्मक अनुक्रिया की योग्यता पायी जाती है। बैकविन और बैकविन (M. Bakwin & R. H.

Bakwin, 1966) का विचार है कि बालक को इस योग्यता को सीखने की आवश्यकता नहीं होती है। नवजात शिशु की यह भावनात्मक अनुक्रिया उनके सम्पूर्ण शरीर की क्रियाओं (Mass Activities) द्वारा व्यक्त होती है। एक अन्य अध्ययन (A. N: Ricciuti, 1968) में भी यह देखा गया है कि जन्म के समय बालक में वह कोई भी स्पष्ट अनुक्रिया नहीं पायी जाती है जिसको विशिष्ट भावनात्मक अनुक्रिया कहा जा सके।

यह देखा गया है कि अपरिपक्व शिशु भी जन्म के समय कुछ भावनात्मक प्रतिक्रियायें प्रस्तुत करते हैं। इन बच्चों की अपेक्षा परिपक्व बच्चे भी जन्म के समय कुछ अधिक भावनात्मक प्रतिक्रियायें प्रस्तुत करते हैं। हरलॉक (E. B. Hurlock, 1978) का इस सम्बन्ध में विचार है कि भावनात्मक व्यवहार के प्रथम लक्षणों के रूप में नवजात शिशुओं में केवल सामान्य उत्तेजनायें (General Excitements) पायी जाती हैं। यह सामान्य उत्तेजनायें नवजात शिशुओं में केवल उस समय ही पायी जाती हैं जब उनके सामने अधिक शक्तिशाली और तीव्र उद्दीपक प्रस्तुत किये जाते हैं। हरलॉक का यह भी कहना है कि इन बच्चों में विशिष्ट भावनात्मक विकास से सम्बन्धित स्पष्ट और निश्चित सांवेगिक प्रतिमान नहीं पहचाने जा सकते हैं। यद्यपि नवजात शिशु में केवल कुछ ही दिनों बाद दो प्रकार के प्रत्युत्तर दिखायी देते हैं। प्रथम प्रकार के प्रत्युत्तर सुखद प्रत्युत्तर हैं, जो नवजात शिशु में उस समय दिखायी देते हैं जब वह स्तनपान करता है, उसे सहलाया जाता हैं या जब वह उपयुक्त तापक्रम के वातावरण में होता है। ऑर्बीसन (Orbison, 1952) का विचार है कि नवजात शिशु के सम्पूर्ण शरीर का आराम में होना ही उसके शरीर के सुख को प्रदर्शित करता है। आयु बढ़ने पर उसकी मुस्कराहट और हँसी से उसके सुख की अनुभूति होती है (The baby shows his pleasure, by a general relaxation of the entire body, not as he will later by smiling or laughing)। दूसरे प्रकार के प्रत्युत्तर बच्चों में असुखद प्रत्युत्तर (Unpleasant Reactions) उस समय होते हैं जब बच्चे की त्वचा से कोई अधिक ठण्डी-गर्म चीज छुलाई जाये, अचानक तेज आवाज की जाये, अथवा बच्चे की स्थिति बेढंगे तरीके से बदली जाये, इस प्रकार के उद्दीपकों से बच्चे में मास (Mass) अनुक्रियाएँ दिखायी देती हैं और बच्चा रोने लग जाता है। स्पष्ट है कि संवेग जन्मजात नहीं होते हैं।

निष्कर्ष

भावनात्मक विकास का विकास बालक में धीरे-धीरे जैसे-जैसे वह वातावरण के सम्पर्क में आता जाता है, होता जाता है। जब बालक लगभग एक वर्ष का हो जाता है तब उसकी भावनात्मक अभिव्यक्तियाँ लगभग उसी प्रकार की हो जाती हैं जैसी वयस्क व्यक्तियों की होती हैं। बच्चों की जैसे-जैसे आयु बढ़ती जाती है, उनमें भय, क्रोध, प्रेम, प्रसन्नता, ईर्ष्या, जिज्ञासा आदि भावनात्मक विकास का विकास होता रहता है। बालक जब छोटा होता है तब उसकी भावनात्मक अभिव्यक्ति में शारीरिक क्रियाओं की प्रधानता होती है परन्तु जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती जाती है, उसमें भाषा विकास होता जाता है। भाषा का पर्याप्त मात्रा में विकास हो जाने पर बालक अपने विभिन्न भावनात्मक विकास की अभिव्यक्ति शारीरिक क्रियाओं की अपेक्षा भाषा द्वारा अधिक करता है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि भावनात्मक विकास की उत्पत्ति वंशानुगत कारकों पर सर्वाधिक निर्भर करती है। वंशानुक्रम के अतिरिक्त वातावरण सम्बन्धी कारक, बालक का स्वास्थ्य, बालक का जन्मक्रम, बालक का लिंग आदि कारक भी भावनात्मक प्रतिमानों के विकास को महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं। भावनात्मक प्रतिमानों के विकास में अधिगम और परिपक्वता का भी वंशानुक्रम की भाँति प्रभाव पड़ता है।

भावनात्मक विकास का विकास (Development of Emotions)

भावनात्मक प्रतिमानों के विकास के अन्तर्गत यह समझाया जा चुका है कि जन्म के समय बालक में भावनात्मक अनुक्रिया की योग्यता पायी जाती है। परन्तु इस भावनात्मक अनुक्रिया का विकास परिपक्वता और अधिगम के आधार पर होता है। परिपक्वता और अधिगम आपस में एक-दूसरे के साथ इतने सम्बन्धित हैं कि इनके सापेक्षिक महत्त्व को समझना कठिन कार्य है।

भावनात्मक विकास के विकास में परिपक्क्तों का कार्य (Rate of Maturation in the Development of Emotions)

गुडएनफ (Goodenough, 1932) ने फोटोग्राफिक विधि की सहायता से दस वर्ष की एक अन्धी और बहरी बालिका के भावनात्मक विकास के अध्ययन में मुखात्मक अभिव्यक्तियों के फोटोग्राफ्स लेकर इनकी तुलना सामान्य किशोर के भावनात्मक विकास की मुखात्मक अभिव्यक्तियों के फोटोग्राफ्स से की है। उसने अपने इस अध्ययन में देखा कि क्रोध, भय, प्रेम, प्रसन्नता और घृणा आदि भावनात्मक विकास का प्रदर्शन अन्धी-बहरी बालिका ने उसी प्रकार से किया जिस प्रकार से सामान्य बालक करते हैं। गुडएनफ ने अपने इन अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकाला कि परिपक्वता भावनात्मक विकास के विकास को प्रेरित

करती है। जॉन्स (Jones, 1928) ने भी एक अध्ययन इस सम्बन्ध में किया है। उसने अपने अध्ययन में भिन्न-भिन्न आयु के किशोर को कमरे में रखकर उनके सामने साँप छोड़कर इनमें उत्पन्न भय संवेग का अध्ययन किया है। जॉन्स ने अपने इस अध्ययन में देखा कि दो साल के बच्चे साँप से किसी भी प्रकार से भयभीत नहीं होते हैं, तीन साल के बच्चे साँप को देखकर थोड़ा-सा सावधान हो जाते हैं तथा चार साल के बच्चों ने साँप से भागने और बचने की प्रतिक्रिया प्रस्तुत की। अपने इस अध्ययन के आधार पर जॉन्स इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भावनात्मक विकास परिपक्वता से प्रभावित होता है।

मॉर्गन (C. T. Morgan, 1965) का विचार है कि भावनात्मक व्यवहार की परिपक्वता के लिए अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों का विकसित होना आवश्यक है। यह देखा गया है कि एड्रीनल प्रन्थि जन्म के कुछ समय बाद ही आकार में छोटी हो जाती है। इस प्रन्थि का भावनात्मक विकास में प्रमुख कार्य होता है। लगभग पाँच वर्ष की अवस्था तक इस ग्रन्थि का तेज गति से विकास होता है। साथ ही साथ इस अवधि में बालक का शारीरिक विकास भी तीव्र गति से होता है। पाँच से ग्यारह वर्ष की अवस्था तक इस प्रन्थि का और बालक का शारीरिक विकास अपेक्षाकृत मन्द गति से होता है। एक बार पुनः इन दोनों का विकास ग्याहर से सोलह वर्ष की अवस्था में तीव्र गति से होता है। सोलह वर्ष की अवस्था में एड्रीनल ग्रन्थि का आकार बढ़कर वही हो जाता है जो जन्म के समय होता है (N. Hicks, 1969)।

भावनात्मक विकास के विकास में अधिगम का महत्त्व (Importance of Learning in the Development of Emotions)

अध्ययनों में यह देखा गया है कि भावनात्मक विकास में मुख्यतः तीन प्रकार के अधिगम का योगदान होता है। अधिगम के यह तीन प्रकार हैं- प्रयत्न और भूल हरा सीखना, अनुकरण द्वारा सीखना और अनुबन्धन द्वारा सीखना। इन तीनों प्रकार के भावनात्मक विकास का बालक के लिए सीखना तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रूप से परिपक्व हो तथा उसकी विभिन्न अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियाँ भी सामान्य रूप से विकसित हुई हों।

बालक का प्रयत्न और भूल द्वारा सीखना (Learning by Trial and Error) बालक के पूर्व अनुभवों पर आधारित है। अध्ययनों में यह देखा गया है कि इस प्रकार का सीखना बालक के भावनात्मक विकास के केवल अनुक्रियात्मक पक्ष (Response Aspect) को प्रभावित करता है। इस प्रकार के अधिगम के द्वारा बालक भावनात्मक विकास को अभिव्यक्त करना सीखता है। उसकी भावनात्मक अभिव्यक्ति का विकास इस प्रकार के अधिगम द्वारा अग्रोन्मुख होता है। बहुधा यह देखा गया है कि बालक उन्हीं भावनात्मक अभिव्यक्तियों को इस विधि द्वारा ग्रहण करता है जो उसे सन्तोष प्रदान करती हैं। अध्ययनों में यह देखा गया है कि बालक भावनात्मक अभिव्यक्ति इस विधि द्वारा बाल्यावस्था में ही अधिक सीखता है। अधिक बड़े होने पर अधिगम की अन्य विधियाँ अपनाता है।

अनुकरण (Imitation) के द्वारा भी बालक भावनात्मक विकास को अभिव्यक्त करना सीखता है। वह दूसरे लोगों के भावनात्मक विकास को जिस प्रकार व्यक्त होते देखता है, ठीक उसी प्रकार वह भी भावनात्मक विकास को अभिव्यक्त करना सीख लेता है। अनुकरण के द्वारा बालक भावनात्मक प्रतिमान के उद्दीपक और अनुक्रिया, दोनों पक्षों को सीखता है अर्थात् किस प्रकार के उद्दीपक की उपस्थिति में किस प्रकार की अनुक्रिया करनी है, यह बालक अनुकरण के द्वारा सीखता है।

अनुबन्धन (Conditioning) या उद्दीपक-अनुक्रिया (SR) के बीच साहचर्य द्वारा भी बालक में भावनात्मक विकास का विकास होता है। अनुबन्धन का मुख्यतः सम्बन्ध भावनात्मक प्रतिमान के उद्दीपक पक्ष से अधिक है। वाटसन (Watson, 1920) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि भय, क्रोध, आदि भावनात्मक विकास को अनुबन्धन के द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है। उसने अपने एक अध्ययन में अलबर्ट नामक 9 माह के बालक में भय संवेग को अनुबन्धन के द्वारा उत्पन्न किया। यह बालक एक खरगोश से खूब खेलता था, एक बार जब वह खरगोश से खेल रहा था तब पीछे से भय उत्पन्न करने वाली एक तीव्र ध्वनि उत्पन्न की गई। इस ध्वनि को सुनकर ही बालक चौंक कर मुँह के बल गिर पड़ा। दूसरी बार जब वह खरगोश के साथ खेल रहा था तो पुनः वह पहले प्रकार की डरावनी ध्वनि उत्पन्न की गई, इस बार यह देखा गया कि बालक सहायता के लिए रोया। जब बार-बार इस परिस्थिति को बालक के साथ दुहराया गया तो कुछ प्रयासों के बाद यह देखा गया कि बालक जिस खरगोश के साथ आनन्द से खेलता था, उस खरगोश को केवल देखकर ही डरने लगा। वाटसन ने अपने इस अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि अनुबन्धन के द्वारा किशोर में भावनात्मक विकास को उत्पन्न किया जा सकता है।

भावनात्मक विकास के विकास में अधिगम और परिपक्वता, दोनों का ही कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। इन दोनों में से ही एक की अनुपस्थिति में भावनात्मक विकास का विकास सम्भव नहीं है। परन्तु यदि अधिगम और परिपक्वता के सापेक्षिक महत्व का भावनात्मक विकास में अध्ययन किया जाय तो यह कहा जा

सकता है कि परिपक्वता की अपेक्षा अधिगम का कार्य अधिक महत्वपूर्ण है। अधिगम कार्य इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसको पूर्णतः नियत किया जा सकता है और इसके आधार पर किशोर को विभिन्न भावनात्मक विकास की अभिव्यक्ति को सिखाया जाता है, विशेष रूप से उन अभिव्यक्तियों को, जो बालक के लिए सुखदायक हैं और समाज द्वारा मान्य है।

किशोर के भावनात्मक विकास की विशेषताएँ (Characteristics of Children's Emotionally)

किशोर और प्रौढ़ों के भावनात्मक विकास समान नहीं होते हैं प्रौढ़ों में भावनात्मक विकास, विकसित (Developed) अवस्था में होते हैं तथा किशोर में संवेग विकासशील (Developing) अवस्था में होते हैं। दोनों में भावनात्मक विकास की संख्या की दृष्टि से भी अन्तर पाया जाता है। प्रौढ़ों में अधिक संख्या में संवेग पाये जाते हैं और किशोर में कम संख्या में पाये जाते हैं। प्रौढ़ों और किशोर की भावनात्मक अभिव्यक्ति में भी अन्तर पाये जाते हैं। किशोर के भावनात्मक विकास की विशेषताओं के वर्णन के अन्तर्गत भी प्रौढ़ों और किशोर के भावनात्मक विकास में अन्तर का वर्णन है।

1. किशोर के संवेग क्षणिक (Transitory) होते हैं। बालक में कोई भी भावनात्मक विकास क्यों न उत्पन्न हुआ हो, वह अधिक देर नहीं रहता है। बहुधा देखा गया है कि हँसते हुए बालक के आँसू थोड़ी ही देर में निकलने लगते हैं। क्रोधित बालक तुरन्त मुस्कराने लगता है। किशोर की अपेक्षा प्रौढ़ों में यदि कोई संवेग एक बार उत्पन्न होता है तो वह अपेक्षाकृत अधिक समय तक व्यक्ति में उपस्थित रहता है। किशोर के भावनात्मक विकास के क्षणिक होने के कई कारण होते हैं; जैसे–अनुभव और बौद्धिक योग्यताओं की कमी के कारण बालक भावनात्मक परिस्थिति और भावनात्मक उत्तेजना को भली-भाँति समझ नहीं पाते हैं। दूसरे किशोर का स्मृति-विस्तार और ध्यान का विस्तार कम होता है, इसलिए भी उनमें उपस्थित संवेग शीघ्र परिवर्तित हो जाते हैं।
2. किशोर में संवेग प्रौढ़ व्यक्तियों की अपेक्षा जल्दी-जल्दी उत्पन्न होते हैं अर्थात् संवेग की आवृत्ति (Frequency) अधिक होती है। प्रत्येक दिन बालक जितनी अधिक संख्या में संवेग का अनुभव करते हैं उतनी अधिक संख्या में प्रौढ़ व्यक्ति नहीं करते हैं। विभिन्न संवेग (भय, क्रोध, प्रेम, घृणा, ईर्ष्या, हर्ष आदि) बालक में थोड़ी-थोड़ी देर बाद उत्पन्न होते रहते हैं परन्तु प्रौढ़ व्यक्तियों में इतनी आवृत्ति नहीं होती है।
3. किशोर के भावनात्मक विकास की तीव्रता (Intensity) अधिक होती है। सम्भवतः उनका भावनात्मक विकास पर नियन्त्रण अधिक न हो सकने के कारण ऐसा होता है। उदाहरण के लिए, क्रोध में बालक हाथ-पैर पटकने के साथ-साथ मचल जाता है; जमीन पर बुरी तरह लोटने लग जाता है, आदि। प्रौढ़ व्यक्तियों के भावनात्मक विकास की तीव्रता इतनी अधिक नहीं होती हैं क्योंकि इनका इनके भावनात्मक विकास पर अधिक अनुभव और अधिक मानसिक योग्यताओं के कारण नियन्त्रण अधिक होता है। बालक की आयु जैसे-जैसे बढ़ती जाती है वैसे-वैसे वह समझने लग जाता है कि उसके भावनात्मक विकास की यह तीव्रता प्रशंसनीय नहीं है, लोग इसका मजाक उड़ाते हैं। अतः उसकी इस प्रकार की समझ बढ़ने के साथ-साथ उसके भावनात्मक विकास की तीव्रता कम होती जाती है।
4. किशोर की भावनात्मक अनुक्रियाओं से वैयक्तिकता परावर्तित (Responses Reflect Individuality) होती है। नवजात शिशुओं की भावनात्मक अनुक्रियाएँ समान होती हैं। उनमें अधिक अन्तर नहीं पाया जाता है। परन्तु शिशुओं की आयु बढ़ने के साथ-साथ उनके अनुभव और मानसिक योग्यताओं में वृद्धि होता है। इस वृद्धि के कारण किशोर की भावनात्मक अनुक्रियाओं में वैयक्तिकता आती जाती है। वैयक्तिकता के कारण ही एक बालक डर के कारण भागना प्रारम्भ कर देता है, दूसरा स्तब्ध खड़ा रह जाता है और तीसरा अपनी माँ के आँचल में छिप जाता है।
5. किशोर के संवगों की शक्ति परिवर्तित होती रहती है (Emotions Change in. Strength)। अध्ययनों में यह देखा गया है कि बालक की आयु बढ़ने के साथ-साथ उसमें कुछ संवर्गों की शक्ति घट जाती है और कुछ भावनात्मक विकास की शक्ति बढ़ जाती है। कुछ संवेग जो अधिक शक्तिशाली होते हैं उनकी शक्ति कम हो जाती है और जिन भावनात्मक विकास की शक्ति कम होती है या जो क्षीण होते हैं, उनकी शक्ति आयु बढ़ने के साथ-साथ कुछ बढ़ जाती है। प्रौढ़ व्यक्तियों के भावनात्मक विकास की शक्ति में काफी स्थिरता आ जाती है।
6. किशोर के भावनात्मक विकास की अभिव्यक्ति का प्रकाशन शीघ्र ही उनके मुखमण्डल से व्यक्त होने लगता है। बहुधा यह देखा गया है कि बालक सामाजिक वातावरण पर बिना ध्यान दिए अक्सर बहुत जोर से क्रोध व्यक्त करते हैं, हर्ष या घृणा व्यक्त करते हैं। प्रौढ़ व्यक्तियों में भावनात्मक विकास की अभिव्यक्ति इतने प्रत्यक्ष ढंग से नहीं होती है। बहुधा वह

अपने भावनात्मक विकास को दबा जाते हैं और भावनात्मक विकास की अभिव्यक्ति समाज द्वारा मान्य ढंग से तथा परिस्थितियों के अनुसार करते हैं। कई बार प्रौढ़ व्यक्तियों के व्यवहार से उनमें उपस्थित भावनात्मक विकास का पता लगाना कठिन होता है परन्तु किशोर के भावनात्मक विकास का पता उनके व्यवहार लक्षणों से सरलता से लगाया जा सकता है (Emotions can be detected by behaviour symptoms)। किशोर की बेचैनी, दिवास्वप्न, रोना-चिल्लाना, नाखून काटना, उँगली- अँगूठा चूसना, भाषा अभिव्यक्ति में अस्थायी दोषों से किशोर की भावनात्मकता का पता चल जाता है परन्तु प्रौढ़ व्यक्तियों में भावनात्मक विकास का पता कठिनाई से लगता है।

7. किशोर के भावनात्मक व्यवहार में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। यदि अनेक किशोर के एक विशिष्ट भावनात्मक व्यवहार की तुलना करें तो यह दृष्टिगोचर होगा कि इस विशिष्ट भावनात्मक व्यवहार में समानता के साथ-साथ अन्तर भी पाया जाता है। भय, क्रोध, प्रेम, घृणा आदि सभी प्रकार के भावनात्मक व्यवहारों में भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के किशोर की भावनात्मक अभिव्यक्तियों में अन्तर पाया जाता है।
8. किशोर के भावनात्मक व्यवहार के निरीक्षण से स्पष्ट होता है कि किशोर के व्यवहार में कुछ विशिष्ट प्रकार के लक्षण पाये जाते हैं; जैसे- चीखना, चिल्लाना, दाँत किटकिटाना, मचल कर जमीन में लोटपोट होना, अँगूठा चूसना, हाथ-पैर पटकना और नाखून काटना आदि।

उपर्युक्त के अतिरिक्त किशोर के भावनात्मक विकास की कुछ अन्य विशेषताएँ भी हैं। उदाहरण के लिये–(क) किशोर के संवेग प्रौढ़ व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक शुद्ध या स्पष्ट होते हैं। (ख) किशोर में एक संवेग दूसरे संवेग में शीघ्र परिवर्तित हो जाता है। रोता हुआ बालक हँसने लग जाता है। (ग) किशोर का उनके संवर्गों पर अधिक नियन्त्रण नहीं होता है। (घ) किशोर के अधिकांश संवेग मूर्त (Concrete) वस्तुओं या परिस्थितियों के सम्बन्ध में होते हैं।

संदर्भ

1. डॉ० वृन्दा सिंह - मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध।
2. डॉ० प्रीति वर्मा एवं डा० डी०एन श्रीवास्तव - बाल मनोविज्ञान : बालविकास
3. एलिजाबेथ हरलॉक - विकास मनोविज्ञान
4. ए०टी० जारसील्ड - किशोर मनोविज्ञान
5. एल कोला - किशोरों का मनोविज्ञान
6. सरयू प्रसाद चौबे - किशोर मनोविज्ञान के मूल तत्व।
7. जोन्स ई० - 1962 सम प्रोबलम ऑफ एडोलेसन्स ब्रिटिश जनरल ऑफ साइकोलॉजी
8. ए. टी. जारसील्ड - साइकोलॉजी ऑफ एडेलिसन
9. लेबी - 1943 मैटर्नल ओवर प्रोटेक्सन न्यूयार्क।
10. वेलेन्टाइ सी०ई० - 1943 एडेविसन एण्ड सम प्रोबलम ऑफ यूथ ब्रिटिश जनरल ऑफ एजूकेशन साइकोलाज।